الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾ ع

किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की[4] और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की[5]

اٰیاتها ٩ | سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ ١٠٤ ٣٢ | رکوعها ١

सूरए हुमज़ह मक्किय्या है, इस में नव आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ﴿۱﴾ ۙ الَّذِیْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ﴿۲﴾ ۙ يَحْسَبُ

ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे[2] जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या येह समझता है

اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ﴿۳﴾ ۚ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِی الْحُطَمَةِ ﴿۴﴾ ۖ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا

कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा[3] हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा[4] और तू ने क्या जाना क्या

الْحُطَمَةُ ﴿۵﴾ ؕ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ﴿۶﴾ ۙ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ﴿۷﴾ ؕ اِنَّهَا

रौंदने वाली अल्लाह की आग कि भड़क रही है[5] वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी[6] बेशक वोह

عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿۸﴾ ۙ فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾ ع

उन पर बन्द कर दी जाएगी[7] लम्बे लम्बे सुतूनों में[8]

में सब से पिछली इबादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह तफ़्सीर वोही है जो हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माने से "मख़्सूस ज़माना" सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुराद है जो बड़ी ख़ैरो बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलतो शरफ़ वाला है। अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि "لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَد" में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि "لَعَمْرُكَ" में आप की उ़म्र शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और इस में शाने महबूबिय्यत का इज़्हार है। **3 :** कि उस की उ़म्र जो उस का रासुल माल है और अस्ल पूंजी है वोह हर दम घट रही है। **4 :** या'नी ईमान व अ़मले सालेह़ की। **5 :** उन तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं, येह लोग ब फ़ज़्ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्यूं कि उन की जितनी उ़म्र गुज़री नेकी और ता़अ़त में गुज़री तो वोह नफ़्अ़ पाने वाले हैं। **1 :** "सूरए हुमज़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, नव आयतें, तीस कलिमे, एक सो तीस हर्फ़ हैं। **2 :** येह आयतें उन कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुईं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब पर ज़बाने त़ा'न खोलते थे और इन हज़रात की ग़ीबत करते थे मिस्ल अख़्नस बिन शुरैक़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिये आ़म है। **3 :** मरने न देगा जो वोह माल की महब्बत में मस्त है और अ़मले सालेह़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करता। **4 :** या'नी जहन्नम के उस दरके (त़बक़े) में जहां आग हड्डियां पस्लियां तोड़ डालेगी। **5 :** और कभी सर्द नहीं होती। ह़दीस शरीफ़ में है : जहन्नम की आग हज़ार बरस धोंकी गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ता आं कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ह़त्ता कि सियाह हो गई तो वोह सियाह है अंधेरी। (ترمذی) **6 :** या'नी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी। दिल ऐसी चीज़ हैं जिन को ज़रा सी भी गरमी की ताब नहीं, तो जब आतशे जहन्नम का उन पर इस्तीला (ग़लबा) होगा और मौत आएगी नहीं तो क्या ह़ाल होगा ! "दिलों को जलाना" इस लिये है कि वोह मक़ाम हैं कुफ़्र और अ़क़ाइदे बात़िला व निय्याते फ़ासिदा के। **7 :** या'नी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे **8 :** या'नी दरवाज़ों की बन्दिश आतिशीं लोहे के सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि

www.dawateislami.net